वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 39 कुल पृष्ठ-8 7 से 13 अक्टूबर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 आ.शु.-01

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् व्याकरण के पंडित स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज पंचतत्त्व में विलीन

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में बनेगी चन्द्रवेश यज्ञशाला

स्वामी चन्द्रवेश जी की स्मृति में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में 3 अक्टूबर, 2021 को प्रेरणा सभा का भव्य आयोजन हुआ सम्पन्न

वेदाचार्य, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य एवं यज्ञ के मर्मज्ञ थे स्वामी चन्द्रवेश जी

– स्वामी आर्यवेश

स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज आर्ष परम्परा के प्रकाण्ड विद्वान् थे

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

आर्य समाज को सर्वात्मना समर्पित, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान्, यज्ञ व व्याकरण के मर्मज्ञ पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का गत् 29 सितम्बर, 2021 को शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में निधन हो गया। उनके निधन का समाचार सुनकर पूरा आर्य जगत स्तब्ध रह गया। स्वामी जी के निधन का समाचार सुनकर आर्य समाज के पदाधिकारी, विद्वान् तथा कार्यकर्ता शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद उनके अन्तिम दर्शनार्थ पहुँचे। स्वामी जी का अन्तिम संस्कार हिंडन नदी के किनारे स्थित श्मशान भूमि पर पूर्ण वैदिक रीति से हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया।

पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज की स्मृति में जगह–जगह प्रेरणा सभाओं का आयोजन करके उन्हें याद किया गया। उसी श्रृंखला में दिनांक 3 अक्टूबर, 2021 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा में प्रेरणा सभा का आयोजन हुआ। इस प्रेरणा सभा में मुख्य रूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, हरियाणा नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी, प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य श्री सत्य प्रकाश आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी, गुरुकुल कालवा के आचार्य श्री राजेन्द्र जी, गुरुकुल सिंहपुरा के मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य जी, गुरुकुल धीरणवास के मंत्री श्री दलवीर आर्य जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, अमेरिका से पधारे डॉ. अमरजीत शास्त्री, एम.डी.यू. से संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या एवं राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, श्री सज्जन सिंह राठी, श्री प्रदीप आर्य, श्री ऋषिराज शास्त्री, श्री अजयपाल आर्य, श्री धर्मेन्द्र कुमार, श्री कृष्ण शास्त्री सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। प्रेरणा सभा प्रातः यज्ञ से प्रारम्भ हुई। इस शांति यज्ञ के ब्रह्मत्त्व का कार्य डॉ. श्यामदेव जी ने संभाला।

प्रेरणा सभा की अध्यक्षता कर रहे वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे, उनके निधन से आर्य समाज में जो रिक्तता आई है उसे निकट भविष्य में भर पाना सम्भव दिखाई नहीं देता है। वे बड़े ही सरल एवं सौम्य स्वभाव के थे। स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज जब से आर्य समाज के कार्यों में लगे तब से वे प्राणपण से जुटे रहे। स्वामी जी ने कई यज्ञों के ब्रह्मा पद को भी सुशोभित किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज व्याकरण के सूर्य थे, वे वेदों के मर्मज्ञ थे। स्वामी जी का यज्ञ के प्रति प्रेम देखते ही बनता था। स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज अनेकों यज्ञों के ब्रह्मा रहे, स्वामी जी को दक्षिणा स्वरूप जो भी राशियाँ प्राप्त होती थीं उसे उन्होंने वैदिक साहित्य पर खर्च करने का संकल्प लिया था। उन्होंने वेद भाष्य प्रकाशन के लिए सार्वदेशिक सभा को लाखों रुपये का दान दिया था। ऐसे महान संन्यासी का हम सबके बीच से चले जाना पूरे आर्य जगत् एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु हम सबको आज इस प्रेरणा सभा में यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके पद्चिन्हों पर चलने का प्रयास करेंगे और समाजोपयोगी कार्यों में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करेंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि उनकी स्मृति में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के नाम से एक भव्य यज्ञशाला तैयार करवाई जायेगी।

नशाबन्दी परिषद्, हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी आर्य समाज की शान थे। सती प्रथा के खिलाफ आन्दोलन और नशाखोरी के खिलाफ जन जागरण में हमेशा नेतृत्व वर्ग के साथ खड़े रहते थे।

स्वामी चन्द्रवेश जी की स्मृति में आयोजित प्रेरणा सभा में उपस्थित प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य श्री सत्य प्रकाश जी आर्य ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी ने आर्य समाज में अनेक वैदिक विद्वान् एवं प्रचारक नवयुवक तैयार किये। वैद्य जी ने संकल्प लिया कि ऐसे महान संन्यासी की स्मृति में हम विशेष प्रकल्प चलाने का कार्य करेंगे।

इस अवसर पर गाजियाबाद संन्यास आश्रम के वर्तमान संचालक शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

31 अक्टूबर जयन्ती पर विशेष

लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल

1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ। अखण्ड भारत दो टुकड़ों में बंट गया, भारत और पाकिस्तान बचे-खुचे भारत की भी स्थिति बहुत अच्छी न थी। देश छोटी-छोटी रियासतों व रजवाड़ों में बंटा हुआ था। इन सबकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता और अपनी-अपनी महत्वाकांक्षायें थीं। आज स्थिति वैसी नहीं है। राजशाही व रियासतों की समाप्ति हो चुकी है।

आज के भारत की तुलना 1947 के भारत से करें। कहां रियासतों में बंटा निर्बल भारत और कहाँ विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र के रूप में सुस्थापित संगठित भारत। इस तुलना के बाद श्रेय देने की बात आती है। यदि किसी एक व्यक्ति को भारत को संगठित करने का श्रेय दें तो वह व्यक्ति होंगे भारत के पहले गृहमंत्री, लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म गुजरात के बोरसद तालुके के करमसद नामक गांव में 31 अक्टूबर 1875 को हुआ था। सरदार पटेल अपने माता-पिता की चौथी सन्तान थे। उनके पिता झवेर भाई एक कृषक थे। सरदार पटेल ने कृषकों की दयनीय स्थिति को केवल देखा नहीं था, बल्कि उसे खूब अच्छी तरह सहन किया था। उनका मत था कि परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़े बिना भारतीय किसानों की स्थिति को सुधारा नहीं जा सकता। सन् 1921 में सरदार पटेल बारहोली के किसान सत्याग्रह के कारण राष्ट्र भर में चर्चा में आ गये। लगान बढ़ाने के विरोध में उन्होंने किसानों का ऐसा नेतृत्व किया कि 'बापू' ने उन्हें 'सरदार' की सम्मानित उपाधि प्रदान की। आज जिस सन्दर्भ में सरदार पटेल सर्वाधिक प्रासंगिक हैं, वह है- राजनैतिक इच्छा शक्ति व पंगु सरकारों के चलते भारत के पुनः खंड-खंड होने की समस्या। आज पृथकतावादी आन्दोलनों ने भारत की अखंडता के लिए संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर रखी है। इन आंदोलनों में प्रमुख है- बोड़ो आन्दोलन, नक्सली आन्दोलन तथा कश्मीर का पृथकतावादी आन्दोलन। इनमें सबसे भयावह आन्दोलन है- पाकिस्तान की धरती से संचालित हो रहा कश्मीर का पृथकतावादी आन्दोलन। इस आन्दोलन की जड़ में जाकर जब हम देखते हैं तो पाते हैं कि यदि 1947 में ही कश्मीर का प्रभार सरदार पटेल के पास होता तो यह स्थिति उत्पन्न न होती।

अन्य कुछ रियासतों की तरह कश्मीर के महाराजा हरि सिंह भी नहीं चाहते थे कि कश्मीर भारत में मिले। सरदार की कूटनीति के कारण अन्य ऐसे राजा तो भारत में मिल गये परन्तु कश्मीर के महाराजा भारत में विलय स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। स्वतंत्रता के समय रियासतों के एकीकरण के लिए जो सूत्र तैयार किया गया था, उसके अनुसार कश्मीर को भारत व पाकिस्तान में से किसी एक में मिल जाना चाहिए था, परन्तु कश्मीर में महाराजा इस सूत्र को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। वे न भारत के साथ विलय चाहते थे और न पाकिस्तान के साथ। वे अपनी स्वतंत्र प्रभु सत्ता चाहते थे, जबकि कश्मीर की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण ऐसा होना न तो उचित था तथा न ही सम्भव। उधर पाकिस्तान, कश्मीर पर दृष्टि गड़ाये बैठा था। अतः 20 अक्टूबर, 1947 के दिन कबायलियों के वेश में पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर में घुस गये और लूटपाट, मारकाट शुरू कर दी। अब महाराजा हरि सिंह घबराये। वे अपने समस्त परिवार तथा सामान सहित श्रीनगर से जम्मू आ गये। 26 अक्टूबर 1947 को उन्होंने उसी प्रकार के सम्मिलित समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये, जिस पर अन्य राज्यों ने किये थे। किन्तु नेहरू जी ने तब भी कश्मीर का मामला सरदार पटेल के रियासती विभाग को नहीं दिया।

अतएव भारत सरकार ने कश्मीर की रक्षा के लिए विमानों द्वारा सेना भेजी, जिसने लुटेरों को पीछे भगा दिया। सरदार पटेल की असहमति व विरोध के बाद भी नेहरू जी ने पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में हस्तक्षेप करने की शिकायत संयुक्त राष्ट्र संघ में कर दी। जबकि उससे कोई लाभ नहीं हुआ, उल्टे क्षति उठानी पड़ी, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन तथा अमेरिका ने पाकिस्तान का पक्ष लिया। इन देशों में पाकिस्तान को आक्रमणकारी नहीं माना, बल्कि भारत से कहा कि वह पाकिस्तान के साथ समझौता

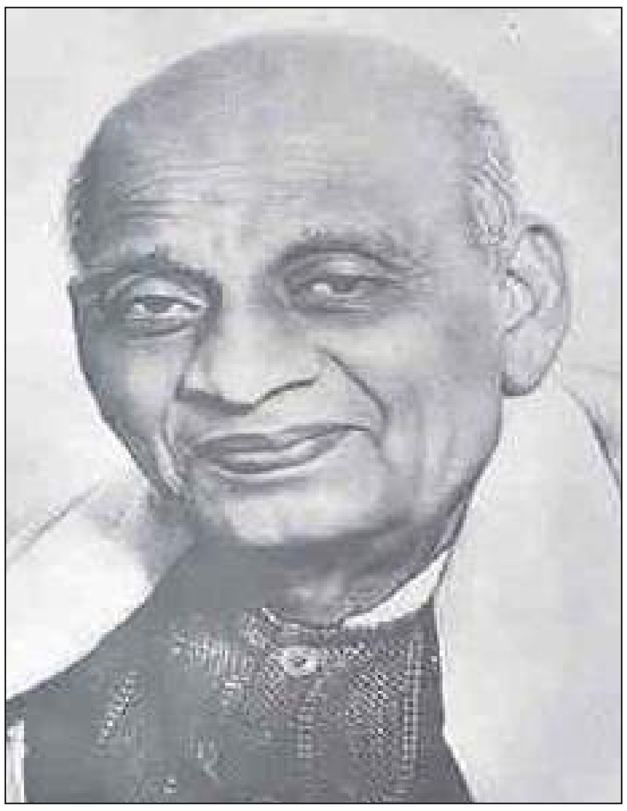

कर ले। यह विषय ऐसा उलझा कि अभी तक नियंत्रण में नहीं आ रहा। 18 नवम्बर, 1947 को कश्मीर के तत्कालीन मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला ने प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के सम्मान में, कश्मीर सरकार ने कला भवन में एक भोज दिया। सरदार पटेल भी इस भोज में सम्मिलित हुए। उन्होंने तत्कालीन कश्मीर के प्रमुख नेताओं में से एक बख्शी गुलाम मुहम्मद से कश्मीर के भविष्य के सम्बन्ध में वार्ता की। कश्मीर में कश्मीर संविधान परिषद का गठन किया गया। तत्पश्चात् 14 नवम्बर, 1952 को कश्मीर संविधान परिषद ने डॉ. कर्ण सिंह को अपना सदरे रियासत (राज्यपाल) चुना। भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 15 नवम्बर, 1952 को उनके पदासीन होने की स्वीकृति दे दी। 9 अगस्त, 1953 को बख्शी गुलाम मुहम्मद कश्मीर के मुख्यमंत्री बनाये गये। कश्मीर संविधान परिषद ने 1956 में सर्वसम्मति से यह निर्णय किया कि कश्मीर, भारत का अभिन्न अंग होगा। 27 जनवरी, 1957 से कश्मीरी संविधान कश्मीर पर लागू हो गया। सरदार पटेल का सुझाव था कि कश्मीर की विशेष स्थिति को समाप्त करके उसे भारत में पूर्णतया मिलाकर वहाँ शरणार्थियों को बसाया जाये और वहाँ बसने की अन्य भारतवासियों पर जो रोक लगी हुई है, उसे हटाया जाये। यदि ऐसा हो जाता तो कश्मीर, विकास के रास्ते पर आगे बढ़ता। शेष भारत की तरह वहाँ भी नये-नये विकास कार्य होते और जनता समृद्ध होती। परन्तु कश्मीर की विशेष स्थिति के कारण न तो कश्मीर का विकास हो पा रहा है और न ही वहाँ की जनता की स्थिति सुधर पा रही है। आर्थिक स्थिति संतोषजनक न होने के कारण वहाँ के नवयुवक सरलता से पाकिस्तान के बहकावे में आ जाते हैं। यही कारण है कि कश्मीर का आतंकवाद समाप्त नहीं हो पा रहा है।

भारत सरकार को आतंकवादियों तक से बातचीत करनी पड़ रही है, भारतीय संविधान तक को वार्ता के दायरे से बाहर रखना पड़ रहा है। इसके बाद भी वार्ता नहीं हो पाती। आतंकवादी और उनके समर्थक दोनों मुँह से वार्ता करने के पक्षधर हैं और हाथों से वार करते रहने के। भारत सरकार भी वार्ता की पक्षधर है, कश्मीर में शांति लाने के लिए, लेकिन यह एक निश्चित तथ्य है कि सरदार पटेल के मार्ग का अनुसरण किये बिना शांति स्थापित नहीं हो सकती। कश्मीर को भी भारत के शेष राज्यों की भांति ही माना जाना चाहिए। अनुदान का लड्डू खिलाने की जगह वहाँ के लोगों को आत्मनिर्भर बनाने की व्यवस्था करनी चाहिए। धारा 370 के चलते वहाँ अन्य भारतीय कुछ सक्रिय प्रयास कर ही नहीं सकते और कश्मीरी समुदाय टुकड़ों में बंटा हुआ है। हिन्दू कश्मीरी कश्मीर छोड़ चुके हैं और शेष कश्मीर, मजहबी उन्माद से पीड़ित हैं। आम आदमी चैन से रोजी-रोटी कमाना चाहता है, जबकि आतंकवादी उन्हें चैन से जीने देना नहीं चाहते। वह असमंजस में है कि भारतीय सैनिकों का साथ दें या आतंकवादियों की सुनें। कश्मीर सरकार का कोई विशेष प्रभाव दिखाई नहीं देता। यदि भारतीय सैनिक कश्मीर में न हो तो कश्मीर सरकार, कश्मीर का शासन नहीं चला पायेगी। सरदार पटेल का कहना था- यदि कश्मीर का मामला उनके निर्देशन में हल किया जाये तो उसका निर्णय 15 दिन में हो सकता है।

अब न तो सरदार पटेल हैं और न ही उनकी वैचारिक दृढ़ता का कुछ अंश कहीं दिखाई दे रहा है। आज उनके विचारों पर ध्यानपूर्वक चिन्तन, मनन और आचरण करने की आवश्यकता है, आखिर भारत की अखंडता की रक्षा का दायित्व तो भारत सरकार का ही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

स्वामी चन्द्रवेश जी का संक्षिप्त परिचय

वीतराग संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी का जन्म ग्राम मकड़ौली कलां, जिला–रोहतक (हरियाणा) के प्रतिष्ठित किसान चौधरी श्री नानकचन्द जी के सुपुत्र श्री रामदास के घर माता श्रीमती लक्ष्मी देवी की कोख से 9 मार्च, 1935 को हुआ था। बचपन में आपका नाम रामचन्द्र रखा गया, किन्तु बाद में उस क्षेत्र के महान प्रचारक एवं वैदिक मिशनरी पं. बस्तीराम जी ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार करके चन्द्रदेव नाम रख दिया। घर पर रहते हुए स्वामी जी को पढ़ने का अवसर नहीं मिला परन्तु आर्य समाज के संस्कार अवश्य मिलते रहे। गाँव में आर्य समाज के उत्सव एवं कार्यक्रम निरन्तर होते रहते थे जिनमें स्वामी जी भी रुचि लेकर भाग लेते थे। उन्हीं दिनों में गाँव के ही कट्टर आर्य समाजी महाशय बलवन्त सिंह की प्रेरणा से वे गुरुकुलीय शिक्षा की ओर प्रवृत्त हुए। प्रारम्भ में गुरुकुल झज्जर गये। किन्तु घर वालों के डर से वे वहाँ नहीं रुके और खेड़ा खुर्द (दिल्ली) चले गये। खेड़ा खुर्द गाँव में स्वामी वेदानन्द तीर्थ के पास कुछ दिन रहे। लेकिन घर वालों को मालूम पड़ गया और वे उन्हें वापिस घर ले आए।

घर पर रहते हुए उन्हें पढ़ने के स्थान पर खेती के काम में लगा दिया गया। किन्तु उनकी लगन गुरुकुल में पढ़ने की बन चुकी थी और वे मौका देखकर फिर खेड़ा खुर्द चले गये जहाँ उनकी भेंट स्वामी सर्वदानन्द जी से हुई। स्वामी सर्वदानन्द जी की प्रेरणा से वे उनके साथ दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब) चले गये और पढ़ना शुरू कर दिया। किन्तु वहाँ से भी उन्हें जाना पड़ा और वे दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) में आ गये। ब्रह्म महाविद्यालय में उपदेशक तैयार किये जाते थे और वहाँ व्याकरण आदि के अध्ययन की सुविधा नहीं थी। इसलिए वे वहाँ भी नहीं रह सके और वहाँ से सीधे गुरुकुल एटा (उ. प्र.) चले गये। घर से सम्पन्न न होने के कारण उनके पास गुरुकुल का खर्च देने के लिए कुछ भी नहीं था। अतः एटा भी उन्हें छोड़ना पड़ा और निकट ही मैनपुरी जिले में स्थित गुरुकुल सिरसागंज में पहुँच गये। वहाँ उनका सम्पर्क ब्र. इन्द्रदेव मेधार्थी (स्वामी इन्द्रवेश) और ब्र. बलदेव (आचार्य बलदेव) से हुआ। ब्र. इन्द्रदेव जी अत्यन्त व्यवहार कुशल और युवकों को उत्साहित करने में अत्यन्त निपुण थे। अतः स्वामी चन्द्रवेश जी का आत्मविश्वास तथा गुरुकुल शिक्षा के प्रति आकर्षण और अधिक बढ़ गया। ब्र. इन्द्रदेव मेधार्थी और ब्र. बलदेव भी घर वालों से छिपकर यहाँ अध्ययन के लिए आये हुए थे। वे छात्रवृत्ति पर पढ़ रहे थे। स्वामी चन्द्रवेश जी की छात्रवृत्ति की भी उन्होंने व्यवस्था करा दी थी। व्याकरण के प्रसिद्ध विद्वान् पं. शंकरदेव जी की प्रसिद्धि सुनकर स्वामी चन्द्रवेश जी तथा ब्र. इन्द्रदेव मेधार्थी एवं ब्र. बलदेव गुरुकुल नौनेर चले गये और वहाँ पं. शंकरदेव जी से अष्टाध्यायी व महाभाष्य का विधिपूर्वक अध्ययन किया। व्याकरण पढ़ने के पश्चात् स्वामी चन्द्रवेश जी वापिस गुरुकुल झज्जर लौट आये और वहाँ से वेदाचार्य, दर्शनाचार्य तथा व्याकरणाचार्य की परीक्षा पास की। संस्कृत साहित्य व्याकरण, दर्शन एवं वेदों का अध्ययन पूरा करके स्वामी जी गुरुकुल झज्जर से विदा होकर जीन्द जिले के कालवा ग्राम में गुरुकुल खोलने की भावना से गये और उन्हें चौ. बनवारी लाल नामक किसान ने गुरुकुल खोलने के लिए डेढ़ एकड़ भूमि दान में दे दी। जैसे–तैसे दान इकट्ठा करके गुरुकुल हेतु एक–दो कमरों का निर्माण भी आपने करवाया। इस कार्य में आपका सहयोग करने के लिए गुरुकुल झज्जर के एक अन्य स्नातक ब्र. वेदपाल भ्राता (जो बाद में संन्यास लेकर स्वामी सत्यवेश बने) भी कालवा आ गये तथा गुरुकुल विधिवत प्रारम्भ हो गया। उसी दौरान आचार्य बलदेव जी तथा उनके छः अन्य सहयोगियों ने गुरुकुल झज्जर छोड़ दिया तथा वे कुछ दिन गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक में निवास करने के पश्चात् आपके पास गुरुकुल कालवा आये। वहाँ के वातावरण से वे अत्यन्त प्रभावित हुए और वहाँ कार्य करने की इच्छा जताई। आपने गुरुकुल का पूरा दायित्व और स्वामित्व आचार्य बलदेव जी को सौंप दिया और स्वयं वहाँ से अन्यत्र चले गये। गुरुकुल सिंहपुरा, सुन्दरपुर, जीन्द रोड, जिला–रोहतक का संचालन उन दिनों स्वामी इन्द्रवेश जी महारात संभाल रहे थे उन्होंने स्वामी चन्द्रवेश जी को गुरुकुल सिंहपुरा का आचार्य पद सौंपकर कार्य करने का आग्रह किया। गुरुकुल सिंहपुरा में कई वर्षों तक स्वामी चन्द्रवेश जी ने तप किया और सैकड़ों युवकों को स्नातक बनाकर निकाला।

गुरुकुल सिंहपुरा में वहाँ की कार्यकारिणी द्वारा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम लागू करने का निर्णय कर लेने के कारण आपने गुरुकुल छोड़ दिया तथा आप गुरुकुल शुक्रताल, उत्तर प्रदेश चले गये। कुछ दिन वहाँ रहने के उपरान्त आपने वेद प्रचार के कार्य में संलग्न होने का मन बना लिया और वापिस स्वामी इन्द्रवेश जी के पास आ गये। उन दिनों स्वामी इन्द्रवेश जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान थे। अतः उन्होंने स्वामी चन्द्रवेश जी को वेद प्रचार अधिष्ठाता बनाकर प्रचार कार्य की जिम्मेदारी सौंप दी। लगभग तीन वर्ष वेद प्रचार अधिष्ठाता रहने के पश्चात् आपने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, जिला–फरीदाबाद का आचार्य पद संभाल लिया। आपकी प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से पठन–पाठन में ही अधिक थी। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का संचालन भी स्वामी इन्द्रवेश जी की देखरेख में हो रहा था। अतः आपको वहाँ रहने में कोई कठिनाई अनुभव नहीं हुई।

सन् 1967 में स्वामी चन्द्रवेश जी ने स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में प्रारम्भ हुए युवक क्रांति अभियान से अपने

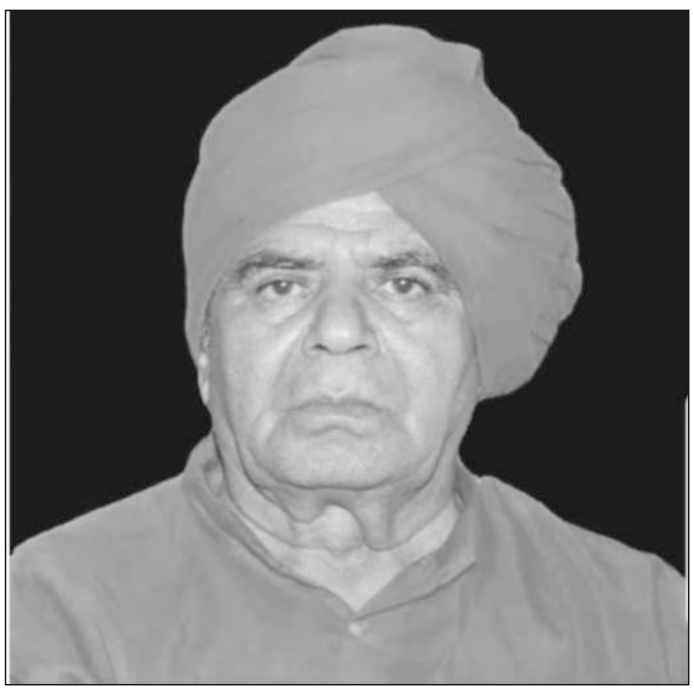

आपको सम्बद्ध कर लिया था। उन्होंने कुरुक्षेत्र से दिल्ली की ऐतिहासिक पदयात्रा में भी भाग लिया था तथा लालकिले के सामने जलती हुई मसाल हाथ में लेकर आर्य राष्ट्र निर्माण का अन्य जीवनदानी आर्य युवकों के साथ संकल्प लिया था। स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रमों एवं आन्दोलनों में उन्होंने बढ़–चढ़कर भाग लिया यथा शराबबन्दी आन्दोलन, सतीप्रथा विरोधी आन्दोलन, दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी आन्दोलन जिसमें 5 हजार स्त्री–पुरुष सम्मिलित हुए थे। इस यात्रा में आप स्वामी इन्द्रवेश जी आदि के साथ गिरफ्तार भी हुए तथा गुड़गांव जेल में बन्द रहे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का कार्यभार संभालने से पूर्व आपने सन् 1976 में रोहतक में आयोजित विशाल आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह में स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में आर्य जगत के उद्भट विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज से संन्यास की दीक्षा ली तथा ब्र. चन्द्रदेव नैष्ठिक से स्वामी चन्द्रवेश बन गये। आपने उत्तर प्रदेश के ग्राम गोराना (बड़ौत), गाँव धरारी, बुलन्दशहर, (उत्तर प्रदेश) में भी स्वयं के प्रयास से गुरुकुल खोलने की कोशिश की किन्तु किन्हीं विघ्न–बाधाओं के कारण सफल नहीं हो पाये। इसी बीच केवलानन्द निगम आश्रम गंज, जिला–बिजनौर में स्वामी इन्द्रवेश जी ने उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ कर दिया था उसके आचार्य पद का दायित्व भी आपने लगभग दो वर्ष तक सम्भाला बाद में आप शम्भू दयाल आर्य वैदिक आश्रम, गाजियाबाद में आ गये और लगभग 36 वर्ष तक आपने यहाँ पहले आचार्य के रूप में तथा बाद में अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। जीर्ण–शीर्ण अवस्था को प्राप्त संन्यास आश्रम को आपने अथक परिश्रम करके अपने तप से नव–जीवन प्रदान किया और इसके गौरव को पुनः स्थापित किया। शम्भू दयाल आर्य वैदिक संन्यास आश्रम की गणना आर्य समाज के उन संस्थाओं में होती है जिनको अनेक आर्य विभूतियों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। संन्यास आश्रम में स्वामी विज्ञानानन्द जी, स्वामी प्रेमानन्द जी, स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी, स्वामी ओमानन्द जी व स्वामी जगदीश्वरानन्द सरीखे संन्यासियों तथा पं. उदयवीर शास्त्री व प्रो. रतन सिंह सरीखे विद्वानों की यह आश्रम तपःस्थली रहा है। इसी संस्था के आचार्य एवं अध्यक्ष पद का दायित्व आपने भी लम्बे समय तक संभालकर इतिहास रचा है। यहाँ भी आपने धीरे–धीरे गुरुकुल प्रारम्भ कर दिया तथा गरीब परिवारों के अनेकों विद्यार्थियों को पढ़ाकर उन्हें सक्षम बनाने का कार्य किया। स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज महात्यागी, तपस्वी, तेजस्वी, वीतराग संन्यासी एवं वेदों, शास्त्रों तथा व्याकरण के उद्भट विद्वान् थे। संस्कृत में वे धारा प्रवाह बोलते थे। उनके त्याग व वैराग्य की उपमा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से की जा सकती है। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द जी घर छोड़ने के पश्चात् वापिस नहीं लौटे। अनेकों कठिनाईयों एवं विपत्तियों को झेला और कभी निराश नहीं हुए उसी प्रकार स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने घर से निकलने के बाद कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। विघ्न–बाधाओं से टकराते रहे, चाहे भूखे रहना पड़ा और चाहे आर्थिक विपन्नता से पीड़ित होना पड़ा तो भी वे कभी घबराये नहीं और उन्होंने तप व संघर्ष का जीवन जिया। उनके द्वारा पढ़ाये हुए हजारों नवयुवक देश–विदेश में विभिन्न क्षेत्र में कार्यरत हैं। उनकी मुख्य प्रवृत्ति आर्ष शिक्षा व वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार की रही। जीवनभर प्रचार कार्यों के दौरान प्राप्त दक्षिणा की राशि को भी उन्होंने अपने ऊपर खर्च नहीं किया बल्कि उसे भी आर्ष साहित्य में ही दान देकर पुण्य अर्जित किया। उदाहरण के रूप में यहाँ यह उद्धृत करना उपयुक्त रहेगा कि जैसे भारत विभाजन से पूर्व संयुक्त पंजाब के जगरांव में जन्में पं. कृपाराम (जो बाद में स्वामी दर्शनानन्द बनें तथा ज्वालापुर महाविद्यालय हरिद्वार में खोला) ने अपने पिता से व्यापार के लिए प्राप्त धनराशि से काशी में व्याकरण की प्रसिद्ध पुस्तक 'काशिका' छपवाकर व्याकरण पढ़ने वाले छात्रों को निःशुल्क बांटी थी, जैसे वीतराग स्वामी ओमानन्द महाराज ने वेद–वेदांग, दर्शन एवं अन्य आर्ष ग्रन्थों का प्रकाशन कर सैकड़ों प्रतिभावान विद्यार्थियों को बिना मूल्य उपलब्ध कराया और अष्टाध्यायी महाभाष्य एवं 'काशिका' निःशुल्क बंटवाकर उन्हें पढ़ने व विद्वान बनने के लिए उत्साहित किया उसी प्रकार स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने प्रचार कार्य तथा यज्ञों में प्राप्त दक्षिणा की राशि से 'काशिका' प्रकाशित कराकर देश के सभी गुरुकुलों में निःशुल्क बंटवाया। वेदभाष्य छपवाने के लिए सार्वदेशिक सभा की अपील पर लाखों रुपया दान दिया तथा इसी प्रकार मनुस्मृति' के प्रकाशन व 'दैनिक यज्ञ पद्धति' की 10 हजार प्रतियाँ प्रकाशित करवाने के लिए लाखों रुपये का सहयोग किया जिससे उनके त्याग एवं आर्ष परम्परा के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा का परिचय मिलता है। स्वामी जी ने जीवनभर जहाँ अध्यापन एवं वेद प्रचार का कार्य किया, वहीं हजारों यज्ञों के ब्रह्मा पद को भी सुशोभित किया। स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक के वे आचार्य थे तथा यहाँ आयोजित होने वाले सभी चतुर्वेद पारायण यज्ञों के वे ब्रह्मा रहे। उनका संकल्प था कि वे यहाँ के यज्ञ के आजीवन ब्रह्मा रहेंगे और यह उनका संकल्प पूरा भी हुआ। स्वामी जी ने कई नवयुवकों को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी और कई महानुभावों को वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षा भी दी। आपने आर्य समाज के हजारों वार्षिकोत्सव एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में सम्मिलित होकर अपने प्रवचनों से आर्यजनों का मार्गदर्शन किया। आपका जीवन चारित्रिक एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त सात्विक एवं पवित्र था। आप एक स्पष्टवादी वक्ता थे और सत्य कहने में किसी का भी लिहाज नहीं करते थे। सत्य कहने का आत्मबल उनमें अद्भुत था। अपने जीवन के लगभग 86 वर्ष पूरे करके वे 29 सितम्बर, 2021 को महाप्रयाण कर गये। उनका व्यक्तित्व सदैव भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।

प्रस्तुति – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज की स्मृति में संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में प्रेरणा सभा व शांति यज्ञ का आयोजन करके दी गई श्रद्धांजलि

स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज व्याकरण के पुरोधा थे

–स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के महान संन्यासी थे स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज – पं. माया प्रकाश त्यागी

स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज सौम्यता एवं सरलता की प्रतिमूर्ति थे – प्रेमपाल शास्त्री

शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद के अध्यक्ष, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली के मुख्य आचार्य एवं गुरुकुल कालवा के संस्थापक स्वामी चन्द्रवेश जी की स्मृति में 2 अक्टूबर (शनिवार) 2021, को संन्यास आश्रम, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में प्रेरणा सभा एवं शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस प्रेरणा सभा का कार्यक्रम सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान एवं दिल्ली प्रान्तीय पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, गुरुकुल नोएडा के आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री श्री प्रवीण कुमार आर्य, श्री ऋषिराज शास्त्री तथा अन्य आर्यजनों ने उपस्थित होकर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी चंद्रवेश जी व्याकरण के पुरोधा थे। वह महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त व संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी थे। आज ऐसा लग रहा है जैसे व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है। स्वामी आर्यवेश जी ने घोषणा की कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के नाम से राष्ट्रीय स्तर के सम्मान प्रतिवर्ष वितरित किये जायेंगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने कहा कि ऐसे विद्वान व तपस्वी कभी–कभी जन्म लेते हैं। पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने अपना पूरा जीवन पठन–पाठन एवं आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के कार्यों में लगाया। स्वामी जी ने संन्यास आश्रम गाजियाबाद के माध्यम से अनेक विद्वान तैयार करके देश–विदेश में भेजने का कार्य किया। ऐसे महान संन्यासी की जितनी प्रशस्ति की जाये उतनी ही कम है। मैं पूज्य स्वामी जी महाराज को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज आर्य जगत के प्रकांड विद्वान, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य भक्त, वैदिक विचारधारा के पोषक, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने वाले व आन्दोलनों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले, त्यागी व तपस्वी महान विभूति व व्याकरणाचार्य थे। ऐसे महान संन्यासी का हम सबके बीच से अचानक चले जाना आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि हम स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज द्वारा चलाये जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लें।उन्होंने कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज उच्चकोटि के विद्वान् संन्यासी थे। उनकी वाणी पर सरस्वती वास करती थीं। ऐसे महान संन्यासी का हम सबके बीच से अचानक चले जाना बहुत ही दुखद है, परन्तु हम सबको उनके जीवन एवं कार्यों से प्रेरणा लेकर उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वैदिक विद्वान् आचार्य जयेंद्र ने कहा कि स्वामी चंद्रवेश जी आर्य समाज की शान थे। स्वामी जी महाराज ने विद्वानों को तैयार करने का कार्य तो किया ही उसके साथ–साथ सतीप्रथा के खिलाफ आंदोलन, नशाखोरी के विरुद्ध जन–जागरण तथा अनेक बड़े–बड़े आन्दोलनों में भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया। ऐसे महान संन्यासी का हम सबके बीच से चले जाना निःसंदेह आर्य समाज को गहरा आघात है। मैं पूज्य स्वामी जी महाराज को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

संन्यास आश्रम, गाजियाबाद के आचार्य सत्यपति जी ने कहा कि गाजियाबाद संन्यास आश्रम आर्य समाज के संन्यासियों व विद्वानों के लिए सदैव समर्पित रहेगा। उन्होंने कहा कि स्वामी जी महाराज के चले जाने के बाद जो रिक्तता आई उसे पूर्ण कर पाना तो नामुकिन है परन्तु हम कोशिश करेंगे कि उनके द्वारा दिखाये मार्ग पर चलकर उनके द्वारा किये जा रहे अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास करेंगे।

आश्रम के मुख्य संचालक श्री सत्यकेतु सिंह ने कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी वेदों के प्रकांड विद्वान थे। वे बड़े–बड़े यज्ञों के ब्रह्मा पद को सुशोभित करते थे। उनके जाने से आर्य समाज की अपार क्षति हुई है। स्वामी जी अत्यंत सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। स्वामी जी से जो भी व्यक्ति मिलता था वह उनके कार्यों एवं व्यवहार को देखकर उन्हीं का होकर रह जाता था।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सत्यवीर चौधरी ने कहा कि ऐसे साधु विरले ही होते हैं। उनके कार्य ही उनकी पहचान हैं। प्रेरणा सभा का प्रारम्भ शांति यज्ञ से हुआ जिसके ब्रह्मा डॉ. जयेंद्र आचार्य रहे।

इस अवसर पर अन्य गणमान्य महानुभावों ने भी उपस्थित होकर पूज्य स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की इनमें मुख्यरूप से डॉ. प्रतिभा सिंघल, पूर्व शिक्षामंत्री श्री बालेश्वर त्यागी, महापौर श्रीमती आशा शर्मा, आश्रम की कार्यकारिणी के सदस्य श्री वेद व्यास, श्री प्रवीण आर्य केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री शिवराज सिंह शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज आर्य समाज की शान थे – स्वामी रामवेश

स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के नाम पर अनेक प्रकल्प शुरू किये जायेंगे – वैद्य सत्य प्रकाश आर्य

हम सभी के प्रेरणास्रोत एवं त्याग की प्रतिमूर्ति थे स्वामी चन्द्रवेश जी – आचार्य विजयपाल

यज्ञ एवं आर्ष सिद्धान्तों के प्रति समर्पित थे स्वामी चन्द्रवेश जी – बहन पूनम आर्या

श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संन्यास आश्रम गाजियाबाद हमेशा आर्य समाज के संन्यासियों व विद्वानों के लिए समर्पित रहेगा। स्वामी चन्द्रवेश जी ने लगभग 35 वर्ष इस आश्रम में तपस्या की और इसको पुनः प्रतिष्ठित किया। उनके इस तप को हम नमन करते हैं।

गुरुकुल झज्जर के संचालक आचार्य विजयपाल जी ने स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि धीरे–धीरे आर्य समाज के स्तम्भ गिरते जा रहे हैं। हम सबको स्वामी जी से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है और आर्य समाज में नये संन्यासियों को दीक्षित करने का संकल्प लेना चाहिए।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज त्याग, तपस्या एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने कहा कि स्वामी जी बेटी बचाओ अभियान से वर्ष 2005 में जुड़े और तब से लेकर अंतिम श्वांस तक बेटी बचाओ अभियान से जुड़े रहे और अपना सात्विक सहयोग देते रहे। स्वामी जी के द्वारा किये गये कार्यों को हम कभी भुला नहीं पायेंगे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज को आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासियों में से एक बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज बहुत ही शान्त स्वभाव के थे, वे हमेशा पठन–पाठन और यज्ञों आदि में अपना पूरा समय लगाते थे। वे नवयुवकों को दीक्षित करने का सराहनीय कार्य किया करते थे। इनके अतिरिक्त स्वामी यज्ञानन्द जी–गुरुकुल कालवा, स्वामी सोमानन्द जी, श्री हनुमंत आर्य मकड़ौली कलां, आचार्या सुरभि कन्या गुरुकुल रुड़की, श्री बलवीर सिंह देशवाल–हिसार, डॉ. राजकुमार गुरुकुल झज्जर, श्री सत्यव्रत शास्त्री मकड़ौली कलां, श्री वेद प्रकाश आर्य–गुरुकुल सिंहपुरा, श्री रणधीर रेढ़ू–जीन्द, श्री शमशेर आर्य हरियाणा राज्य गोशाला संघ, पूर्व विधायक श्री अजीत सिंह सहित अन्य महानुभावों ने अपनी–अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन स्वामी आदित्यवेश जी ने किया। प्रेरणा सभा में सम्मिलित हुए सभी गुरुकुलों को स्वामी जी की स्मृति में 5100–5100 रुपये दान स्वरूप भेंट किये गये।

ऋग्वेद यजुर्वेद ॥ ओ३म् ॥ सामवेद अथर्ववेद

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के अमृत महोत्सव वर्ष में

मानव सेवा प्रतिष्ठान

60बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली–110029

एवं

नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी

के संयुक्त तत्वाधान में

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

का

भव्य आयोजन

दिनांक : 24 अक्टूबर 2021 ★ समय : प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक

स्थान : गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली–110049

(निकट ग्रीनपार्क मैट्रो स्टेशन)

निवेदक

चन्द्रदेव शास्त्री (प्रधान)	सोमदेव शास्त्री (वरिष्ठ उपप्रधान)	हरवीर सिंह शास्त्री (उपप्रधान)	डॉ. कँवरसिंह शास्त्री (महामन्त्री)
संजय कुमार सहरावत (मन्त्री)	श्रीमती कमलेश (उप–मन्त्री)	श्रीमती उषा आर्या (कोषाध्यक्ष)	राजवीर सिंह शास्त्री (सदस्य)
बलजीत सिंह सांगवान (सदस्य)	श्रीमती शीला देवी (सदस्य)	श्री देवदत्त डबास (Chairman) (NAJC Scholarship Committee)	रामपाल शास्त्री (कार्यकर्त्ता प्रधान)

सम्पर्क सूत्र :
9810283782, 9868365727, 9416711417, 9999027992, 9811912085, 9968914743

मान्यवर महोदय, मानव सेवा प्रतिष्ठान प्रतिवर्ष निर्धन, आश्रयविहीन एवं मेधावी छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान कर उत्साहवर्द्धन करता है तथा समाज सेवा में समर्पित विद्वान्–विदुषियों संन्यासियों, भजनोपदेशकों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करता है। अबतक 170 विद्वान् विदुषियों का सम्मान एवं हजारों छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की चुकी है। इस वर्ष छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह में आप सभी कार्यक्रमानुसार सादर आमन्त्रित हैं।

कार्यक्रम

दिनांकः– 24 अक्टूबर 2021, स्थानः– गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली

अध्यक्षता : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (प्राचार्य गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली)

उद्घाटन : स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा),

मुख्य अतिथि : श्री रामस्वरूप आर्य (प्रधान—नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी)

: श्री केशव बलदेव प्रसाद तिवारी (अमस्तरडैम हालैण्ड)

: चौधरी देवदत्त डबास (प्रधान–मानव सेवा प्रतिष्ठान, यू.एस.ए.)

विशिष्ट अतिथि : डॉ. योगानन्द शास्त्री (भूतपूर्व विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली)

: डॉ० जगवीर सिंह (सदस्य–नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी)

: श्री आजाद सिंह लाकड़ा (प्रधान–दीनबन्धु छोटूराम मैमोरियल एजुकेशन सोसाईटी दिल्ली)

: श्री विद्यामित्र ठुकराल (ग्रीनपार्क, नई दिल्ली)

वक्तागण

मा. रामकुमार जी गहलावत (सांपला–हरियाणा), श्री जसबीर सिंह मलिक (सम्पादक–जाट रत्न रोहतक), श्रीमती सन्तोष आर्या (अमेरिका), डॉ. अजय कुमार शास्त्री (जे.एन.यू.), डॉ. अनिल दलाल (हिसार), डॉ. सुकामा जी (प्राचार्या विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की), श्रीमती सरोज मुखी जी (अमेरिका)

छात्रवृत्ति वितरण

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा 120 विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

नोर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी

अभिनन्दन

1. स्वामी आनन्दवेश जी (गुरुकुल शुक्रताल, उ.प्र.) को स्वर्गीय चौधरी फतेह सिंह, कुमासपुर सोनीपत (हरयाणा)
2. स्वामी आदित्यवेश जी (प्रधान–सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्) को स्वर्गीय श्री रामपत आर्य, इस्माईला रोहतक (हरयाणा)
3. श्रीमती ज्योति आर्या जी (रोहतक, हरयाणा) को स्वर्गीया श्रीमती लज्जावती देवी न्यूजर्सी (अमेरिका)
4. श्री सहदेव बेधड़क जी (भजनोपदेशक) मुजफ्फरनगर, उ.प्र. को स्वर्गीय चौधरी राजेन्द्र देव सिंह आर्य, याकूबपुर, झज्जर (हरयाणा)
5. श्री वेदपाल जी (भजनोपदेशक) बागपत, उ.प्र. को स्वर्गीय देवपाल शास्त्री मकड़ौली कलां, रोहतक (हरयाणा)
6. श्री उपेन्द्र जी (भजनोपदेशक) चण्डीगढ़ को स्वर्गीय श्री बिशन नारायण मुखी, कीर्तिनगर, दिल्ली
7. श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार जी (कानपुर, उ.प्र.)को स्वर्गीया श्रीमती मुख्त्यारी देवी, बेरी झज्जर (हरयाणा)
8. आचार्या सुमति जी (श्रीमद्दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल नवलपुर, बिजनौर, उ.प्र.) को स्वर्गीया श्रीमती वेद कौर आर्या, याकूबपुर, झज्जर (हरयाणा)
9. प्रियंका आर्या जी (भजनोपदेशिका) कन्या गुरुकुल भुसावर, भरतपुर, राजस्थान को स्वर्गीया श्रीमती शीलवती देवी, बल्लभगढ़, भरतपुर (राजस्थान)
10. ब्र. अग्निदेव नैष्ठिक जी गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, हिसार, हरयाणा को स्वर्गीया श्रीमती इतवारिया रामदास तिवारी, अमस्टरडैम (हॉलैण्ड)
11. बहन कल्याणी आर्या जी (भजनोपदेशिका) आर्यनगर, हिसार को स्वर्गीया श्रीमती बरजी देवी धर्मपत्नी श्री खूबराम, खानुपर कलां, झज्जर (हरयाणा)
12. श्री सत्यपाल सरल जी (भजनोपदेशक) देहरादून, उत्तराखण्ड को स्वर्गीय श्री मास्टर रत्नसिंह डबास, सुल्तानपुर डबास (दिल्ली)
13. स्वामी नित्यानन्द जी (गुड़गांव, हरयाणा)को स्वर्गीय श्री शुभराम सहरावत, पालम (दिल्ली)
14. स्वामी आत्मानन्द जी (कोसीकंला, मथुरा) को स्वर्गीय श्री ऋषि तिवारी अमस्टरडैम (हॉलैण्ड)
15. ब्र. अयन शास्त्री जी (प्रबन्धक–पं. लेखराम आर्ष गुरुकुल वेलीनेष्षी, पालक्काड, केरल) को स्वर्गीय चौ. हुकुम सिंह, बेरी झज्जर (हरयाणा)
16. श्री हर हर आर्य जी (आर्य समाज निरसा, धनबाद झारखण्ड) को स्वर्गीया मोहन देवी मुखी, कीर्तिनगर (दिल्ली)
17. कुमारी मुकेश आर्या जी (प्रचारिका–भिवानी, हरयाणा) को स्वर्गीया धीरज आर्या रोहतक (हरयाणा) की स्मृति में सम्मानित किया जायेगा।
18. श्री गंगाराम जी (भजनोपदेशक) पलवल, हरयाणा को स्वर्गीया श्रीमती शीलवती देवी, बल्लभगढ़, भरतपुर (राजस्थान)

विशेष सहयोगी

1. चौधरी देवदत्त डबास, श्रीमती सुमेधा डबास (प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान, अमेरिका एवं चेयरमेन, नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी)
2. श्री केशव प्रसाद बलदेव तिवारी (अमस्टरडैम, हॉलैण्ड)
3. डॉ. विजयपाल आर्य एवं श्रीमती कल्पना आर्या (अमेरिका)
4. श्रीमती दिलभरी (ईस्माइला–रोहतक, हरयाणा)
5. श्री पद्मसिंह कादयान एवं श्रीमती सुमन कादयान (अमेरिका)
6. श्री वीरसेन मुखी एवं मुखी परिवार कीर्तिनगर, दिल्ली
7. श्री ब्रह्मजीत सिंह एवं कर्मजीत सिंह (याकूबपुर–झज्जर, हरयाणा)
8. श्रीमती कमलेश देवी (मकड़ौली कला–रोहतक, हरयाणा)
9. श्री मास्टर रामकुमार गहलावत (खानपुर कलां–झज्जर, हरयाणा)
10. श्री धर्मपाल सहरावत एवं श्रीमती शीला देवी (पालम, दिल्ली)
11. श्री चन्द्रदेव शास्त्री एवं श्रीमती स्नेहलता कुमासपुर–सोनीपत (हरयाणा)
12. श्री चन्द्रभान आर्य एवं श्रीमती लक्ष्मी आर्या (अमेरिका)
13. श्री डॉ. अमरजीत शास्त्री (आर्य समाज, हिल साईड, न्यूयार्क, अमेरिका)
14. श्रीमती सुशीला बलदेव मल्हू (पारामारीबो, सूरीनाम)
15. श्री ओ.पी. वर्मा एवं श्रीमती लीला वर्मा (अमेरिका)
16. श्रीमती सरोज मुखी (अमेरिका)
17. श्री पण्डित जगदीशचन्द दातादीन (देनहॉक, हॉलैण्ड)

मानव सेवा प्रतिष्ठान सूरीनाम के सहयोगी

श्रीमती सुशीला बलदेव मल्हू , श्री सत्यप्रसाद बलदेव, आध्यात्मिक कक्षा पारामारीबो, श्री शिवनारायण रघु सिंह रामटहल परिवार, श्री नारायण दोदा, श्री जगदीश विश्वेश्वर, पण्डिता विमला तुकुन, पण्डित श्री विरजानन्द अवतार, श्री विराज अवतार, संस्था जागृत आर्य मण्डल, श्री विनोद सेवव्रत मिश्र, श्रीमती रैना रामवतार ओरी, पण्डिता निर्मल बदलू, श्रीमती संन्ध्या भग्गू, श्रीमती सरिता गंगा व श्री विजय गंगा, पण्डिता कमला रामचरण, पण्डित इन्द्रदत्त तिलकधारी, श्री रतन अयोध्या, श्री शान्ति प्रकाश मल्हू, श्री राजेश लालसा, पण्डिता छेदी अवतार, पण्डिता तारा बदलू।

मानव सेवा प्रतिष्ठान, यू.एस.ए. के सहयोगी

स्व. श्री जयभगवान जागलान, डॉ. विजयपाल आर्य, चौ. देवदत्त डबास, श्रीमती सुमेधा डबास, डॉ. जगवीर सिंह, श्रीमती सरोज मुखी, श्रीमती विजयलक्ष्मी अरोड़ा, श्रीमती सुदेश मुखी, श्री वीरेश्वर अहलावत, श्री चन्द्रभान आर्य, श्रीमती लक्ष्मी आर्या, श्री ओम धीमान, डॉ० सुदर्शन जग्गा, श्रीमती शर्मिला रामसेवक, श्री ओ०पी० वर्मा, श्री वीरसेन मुखी, डॉ० सुधीर आनन्द, श्री रामस्वरूप आर्य, श्री संदीप मुखी एवं श्री अरविन्द मुखी, आचार्य सुरेन्द्र भारद्वाज, श्रीमती राजबाला जागलान, श्री पद्मसिंह कादयान, डॉ. सतीश प्रकाश, पण्डिता अमृता सिंह, श्री जीतेन्द्र अबदी, श्रीमती अनुराधा धीर, श्री प्रेम सिंगला, श्री अमरराम सेवक, श्री राज भल्ला, श्री धर्मपाल डूडी (इंग्लैंड), श्री रवि चौधरी, डॉ. अभयदेव शर्मा (कनाडा)।

मानव सेवा प्रतिष्ठान, हालैण्ड के सहयोगी

श्री एस० महेश एवं श्रीमती गायत्री देवी, श्री पण्डित जगदीश चन्द दातादीन, श्री आर.ओ. डीहल, श्री देवव्रत सुक्खु, श्रीमती नीता सुक्खु, गीताकल्लू जयश्री, श्री गंगा प्रसाद कल्पू, श्रीमती सविता बिरजा मलिक, श्री रोबी आर. भुण्डी (देनहॉक) श्रीमती धर्मवती ओरी, श्री सुरेश पुल्लु, पण्डिता चन्द्रकली सिंह, पण्डिता चन्द्रदेई विश्वेश्वर, श्री ग्रेशन स्वयंबर, श्री महेन्द्रसिंह दहिया, श्रीमती कीर्ति अवतार, पं० जीवन गणेश, श्री हरिदत्त विश्वेश्वर, श्रीमती सुशीला कल्लू, श्री समीप्रसाद देवीदीन, श्रीमती ज्ञानस्वरूप तुकुन, श्री विष्णु प्रसाद जयपाल, श्री रणधीर प्रतिमन, श्री राजगोपालाचार्य तुकुन, श्रीमती टीना याकुब, पं. रवीन्द्र पिकार (रोटरडैम), श्री इन्द्र मतऊ, श्री राजेन्द्र गणपत, श्री अमरीश तिवारी, श्री विजय तिवारी, कुमारी किरना तिवारी, श्री ए.महेश, श्री केशव बलदेव प्रसाद तिवारी, श्री डी. ओमेल, (अमस्टरडैम) श्री एच० गोपाल, श्री अवध नारायण रक्तू, श्री सुरज जगई, (एन्स्कदेई) श्री सुदामा रामशरण मिश्र, श्री भगवान देई रामशरण मिश्र, श्रीमती ससकिया विश्वेश्वर (नेबीखेन), श्री जगदीश तिवारी, पण्डित नरदेव यजुर्वेदी (सुतरमेर) श्री सुरेन महाबली (यूत्रेख)

भारत के सहयोगी

सर्वश्री के०के० सहरावत, श्री संजय सहरावत, श्री प्रशान्त सहरावत, श्री धर्मपाल सहरावत, श्री सुधीर सहरावत, श्रीमती सोनिया सहरावत, श्रीमती शीला देवी (पालम), श्री सुरजीत राणा (करनाल), डॉ० तारकनाथ (दिल्ली), श्री जितेन्द्र सांगवान (बुटाना), श्री प्रदीप दहिया (बहादुरगढ़), श्री प्रवीण आर्य (दिल्ली), श्रीमती नीतू (नजफगढ़), डॉ. कुलदीप शास्त्री, श्री विकास गुप्ता व नितिन गुप्ता (नरेला), डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, श्री दीपक खतरी, डॉ. सुखदा शास्त्री, श्री रामकुमार सपरा, श्री इन्द्रजीत शास्त्री (रोहतक), श्री वेदप्रकाश भाटिया, श्रीमती प्रिंयका सहरावत (गुड़गांव) श्री दयानन्द देसवाल (खेड़का, झज्जर), श्री सतपाल टोकस (बामड़ोली), श्रीमती बिन्दु (डाबड़ी), श्री मुकेश डागर (बरोटा), श्रीमती सविता शास्त्री (गजरौला), उर्वशी डबास (पूठ खुर्द), विनोद कुमार (मकड़ोली), श्री दलीप सिंह (हुमायुँपुर), नीतू डबास (रोहिणी), श्री जगदीश राणा (सोनीपत) श्री रामकुमार गहलावत (सांपला) , श्रीमती दिलभरी (ईस्माइला) श्रीमती कमलेश (मकड़ोली) , श्री ब्रह्मजीत सिंह व श्री कर्मजीत सिंह (याकूबुपर), चौधरी बलजीत सिंह सांगवान (नजफगढ़)

भण्डारा

प्रातः 9 बजे नाश्ता (प्रातःराश) एवं दोपहर 1 बजे भण्डारे का आयोजन है।

अपील

मानव सेवा प्रतिष्ठान 1998 से आप सबके सहयोग व आशीर्वाद से सामाजिक कार्यों में संलग्न है। प्रतिष्ठान ने अब तक के अपने सेवाकाल में लगभग 170 विद्वान्, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया है तथा हजारों छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति के रूप में सहयोग देकर प्रतिष्ठा प्राप्त की है। यह सब आपके सहयोग व आशीर्वाद से ही सम्भव हुआ है। अतः पूर्व की भाँति आप अपना सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें।

1.	अपने आदरणीय पूर्वजों की स्मृति में विद्वान्, विदुषियों, संन्यासियों तथा सामाजिक कार्यकत्ताओं का सम्मान करते हेतु	21,000
2.	एक छात्र पर पूरे वर्ष का व्यय देकर आप सहयोग कर सकते हैं।	15,000
3.	प्रतिभा पुरस्कार (छात्रवृत्ति) हेतु प्रति छात्र	3,100
4.	भोजन–भण्डारे एवं अन्य व्यय हेतु	स्वेच्छानुसार

Applicants :

Manav Sewa Pratishthan

manavsevapratisthan@rediffmail.com

Delhi : 60-B, Humanyupur, New Delhi-110029 Tel.: +91-9968357535, 9868365727, 9810283782, 9873222614

USA : 144-53 85th, Jamaica, NY, 11435 Tel.: 718-658-2085, 917-299-1589, 516-946-1749

Netherlands : Mathenesserdijk, 459k, 3026gh, Rotterdam Tel.: 070-380-4576, 010-844-3882

Suriname : Vel Dhuizen Laan, 44, Paramiribo, 18th Suriname-430317 Tel.: 5978607705

सहायता राशि कृपया इस पते पर भेजें—

मानव सेवा प्रतिष्ठान, खाता संख्या-340602010043847, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली

भ्रान्तियों का भार न ढोइये

– ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त, बी.एस.एम.

धर्मग्रंथ घर में रखकर, केवल उसकी पूजा करने से या आरती उतारने से जीवन मंगलमय होता है – यह विचार भ्रांतिमूलक है। धर्म ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिए और धर्म पथ पर स्वयं चलना चाहिए। धर्म के निर्देशों पर आचरण करने से ही हम आनन्दित होते हैं। केवल वेदमंत्र का पाठ करने से एक आर्य वेदमार्गी नहीं बन जाता। वेदमंत्र का अर्थ समझकर और वेदोक्त मार्ग पर चलकर, ईश्वर की आज्ञा का पालन करके ही एक व्यक्ति सच्चा आर्य (श्रेष्ठ पुरुष) बन सकता है। चारों वेदों को घर की अल्मारी में सजाने मात्र से ही जीवन आनन्दमय हो जायेगा – यह केवल एक भ्रांति है। भ्रांति दुःख का मूल है, सुख का नहीं। यही बात अन्य धर्मों के ग्रंथों पर भी लागू होती है। मनुष्य होकर पशु के समान पीठ पर धर्म ग्रन्थ का बोझ ढोने से क्या कोई लाभ होगा? कभी भी नहीं।

एक साधु ने एक बहेलिये से, उसके द्वारा जंगल में पकड़ा गया एक तोता इसलिए खरीद लिया ताकि वह तोता पिंजरे का पक्षी न बन जाये। साधु द्वारा सिखाये जाने पर वह तोता एक चेतावनी भरा स्वाधीनता का गान गाने लगा। फिर साधु ने उस तोते को उसके पैतृक परिवार से मिला दिया। साधु के तोते ने अपनत्व अर्जित ज्ञान एवं गान पूरे कुन्बे को सिखा दिया। अब उसी स्वाधीनता ज्ञान से उदय होता था भोर का तारा और उसी से ढलती थी शाम। कालान्तर में वही बहेलिया उसी जंगल में उसी उद्देश्य से आया। सभी तोते एक साथ एक ही गीत गा रहे थे –

बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाने डालेगा, हमें फंसायेगा, किन्तु हम नहीं फंसेंगे, नहीं फंसेंगे।

बदली हुई परिस्थिति में, अपनी रोटी–रोजी हाथ से निकलते देखकर बहेलिया गश खाकर गिर पड़ा। होश आने पर, उसने सोचा कि जब जंगल तक आये हैं तो दाना डालने और जाल बिछाने की खानापुरी कर ही दी जाये। ऐसा करके पेड़ की छांव में और शीतल समीर में वह सो ही गया। बहेलिये की जब आंख खुली तो उसे स्वयं अपनी ही आंखों पर विश्वास न हुआ। दाना खाने आये अनगिनत तोते अब जाल में फंसकर स्वाधीनता गान गा रहे थे – 'बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाने डालेगा, हमें फंसायेगा, किन्तु हम नहीं फंसेंगे, नहीं फंसेंगे, नहीं फंसेंगे।' फिर भी सभी तोते उस बहेलिये के जाल में फंसे हुए थे। स्वाधीनता गान गा लेने से ही हम स्वाधीन बने रहेंगे, यह एक भ्रांति हैं। भ्रांतिमय जीवन जी कर हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकते, लक्ष्य कुछ भी क्यों न हो। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हम भारतवासियों ने 'वन्देमातरम्' गाया, साथ–साथ पुरुषार्थ से स्वतंत्रता अर्जित की। गान एवं पुरुषार्थ साथ–साथ चलें और हम गंतव्य तक पहुंच गये। विश्व ने हमारी मंगल कामना की। किन्तु हम अपनी ही रची भ्रांति में कहने लगे कि 'वन्देमारतम्' सेक्युलर नहीं है – उसे 15 अगस्त, 1947 से आज तक कभी ध्वजारोहण के समय गा न सके, बजा न सके। सेक्युलर रूप भ्रांति के भूलैया में भटकते रहे। मनीषी मानव होकर भी रट्टू तोते समान अर्जित ज्ञान को आचरण में ढाल न सके।

नवीन वेदान्तियों समान भ्रांति द्रष्टा अपनी संख्या और शिष्य संख्या बरसाती मेंढकों की तरह बढ़ाते जा रहे हैं। भ्रांति द्रष्टा भ्रांति मूलक विचारों का सहारा लेकर भोले–भाले नर–नारी को ठगते रहते हैं। भोली जनता का पैसा मारना आज एक पनपता व्यवसाय बन गया है। 'पोपलीला' यानी'राम राम जपना, पराया माल अपना', छद्मी ब्राह्मणों की जीवन लीला हो गई है। कुछ तथाकथित धर्म प्रमुख, वेदवाणी जन–जन तक नहीं जाने देते हैं क्योंकि उन्हें डर है कि वेद मार्ग पर चलने वाले भ्रांतियों से भ्रमित न होंगे और मक्कार पुरोहितों का बटुआ न भरेंगे। स्त्रियों से वेद पढ़ने का अधिकार छीनना एक बड़ी साजिश थी। पूरे हिन्दू समाज के विरुद्ध। इस हिन्दू हित हनन के षड्यन्त्र में शामिल थे पोंगा–पंथी बम्मन (उन्हें ब्राह्मण न कहिये) जो स्वयं निरक्षर थे और पूरे स्त्री समाज को वेद विहीन बनाना चाहते थे ताकि सदैव ही अपना उल्लू सीधा करते रहें। स्त्रियाँ ही 'माता' हैं, और सभी बच्चों के लिए माता ही प्रथम विद्यालय है। जब माता वेद विहीन है, अशिक्षित है तो उस माता रूपी विद्यालय में शिक्षा का अंकुर कैसे निकलेगा, कैसे पनपेगा? वेदमाता (स्तुता मया वरदा वेदमाता), (अथर्ववेद) और बच्चों की माता के बीच पोंगा पंथी पंडितों ने एक अभेद्य दीवार खड़ी कर दी और कहा ^L=h'kn्k uk/kh;krkfefr J्r%* – स्त्री और शूद्र न पढ़ें, यह श्रुति है – जबकि ऐसा कहीं किसी आर्षग्रंथ में नहीं लिखा है। कपोल कल्पित श्रुति के आधार पर अवैध आय का मार्ग मिला।

एक भ्रांति लोकप्रिय की गई – शनि देवता पर यदि रुपये शनिवार को नहीं चढ़ाये गये तो घोर अनिष्ट होगा। शनिदेव को धन से संतुष्ट किये बिना शनिवार को कोई नया काम न शुरू करना अन्यथा कार्य में विघ्न तो पड़ेगा ही कार्य शुरू करने वाला भी परमात्मा को प्यारा हो सकता है। फिर क्या होता है? पोंगा पंथी विशेष यज्ञ का मिथ्या आयोजन करते हैं और शनिदेव पर चढ़ाया गया चढ़ावा चट कर जाते हैं लम्बोदर पुजारी। आज भी प्रत्येक शनिवार, हर चौराहे पर टीन के डिब्बे मे काली वीभत्स आकृति को शनिदेव का नाम देकर, लाल बत्ती पर रूके कार चालकों से पैसा एंठने वालों की कमी नहीं है। स्वदेशी और विदेशी नर–नारियों के सामने धर्म का अपमान करते हैं और देश का अपमान करते हैं ये 'शनि के ठग'। वैदिक धर्म में, शनैश्चर तो परमपिता परमात्मा का एक नाम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखते हैं – ^;% 'kuS'pjfr l 'kuS'pj%% & जो सबसे सहज में प्राप्त धैर्यवान है, इससे उस परमेश्वरका नाम शनैश्चर है।'

अतः शनैश्चर धैर्यवान परमात्मा का नाम है और दयालु परमात्मा चढ़ावा नहीं चाहता, चढ़ावा न चढ़ाये जाने से कदापि क्रोधित नहीं होता। शनिवार को कार्य आरम्भ अशुभ है। – यह एक भ्रांति है। शनिदेव एक कुपित होने वाले 'नाशक देव' हैं। यह भी एक भ्रांति है। शिक्षित नर–नारियों को शोभा नहीं देता कि ढोंगियों की पेट पूजा के लिए भ्रांतियों का भार ढोते रहे।

धर्मग्रंथ घर में रखकर, केवल उसकी पूजा करने से या आरती उतारने से जीवन मंगलमय होता है – यह विचार भ्रांतिमूलक है। धर्म ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिए और धर्म पथ पर स्वयं चलना चाहिए। धर्म के निर्देशों पर आचरण करने से ही हम आनन्दित होते हैं। केवल वेदमंत्र का पाठ करने से एक आर्य वेदमार्गी नहीं बन जाता। वेदमंत्र का अर्थ समझकर और वेदोक्त मार्ग पर चलकर, ईश्वर की आज्ञा का पालन करके ही एक व्यक्ति सच्चा आर्य (श्रेष्ठ पुरुष) बन सकता है। चारों वेदों को घर की अल्मारी में सजाने मात्र से ही जीवन आनन्दमय हो जायेगा – यह केवल एक भ्रांति है। भ्रांति दुःख का मूल है, सुख का नहीं। यही बात अन्य धर्मों के ग्रंथों पर भी लागू होती है। मनुष्य होकर पशु के समान पीठ पर धर्म ग्रन्थ का बोझ ढोने से क्या कोई लाभ होगा? कभी भी नहीं। गधा एक सहनशील बोझढोने वाला जीव है। उसकी पीठ पर पत्थर का बोझ हो या हो शास्त्रों का, गधे के लिए तो दोनों ही केवल बोझ हैं।किन्तु हम मनुष्यों को शास्त्रों का बोझ नहीं ढोना है, शास्त्रों के अनुसार ही जीवन जीना है। शास्त्र, जो ऋषि प्रणीत हैं, हमें सत्य पथ दिखलाते हैं, जहां जीवन में प्रकाश होता है जो हमें भ्रांतियों की अंधेरी गलियों में खो जाने से बचाता है।

अविद्या जननी है भ्रांति की। अविद्या अन्धकार हैं पिछली कई शताब्दियों से स्त्रियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखकर भारतीय समाज ने अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार ली। देश की जनसंख्या का आधा भाग अविद्या के अंधकार में चला गया। अशिक्षित व्यक्ति में भ्रांतिमूलक विचार पनपते हैं। जब माताएं भ्रांति ग्रस्त हो जाती हैं तो बच्चों के कोमल मन को भ्रांति ग्रसित होने में विलम्ब कहां। बचपन में जो भ्रांति भीतर घुस जाती है, वह बाद में शिक्षा के पैने प्रहार से भी निर्मूल नहीं हो पाती। भ्रांति की बेल (पैरासाइट) समान है। भ्रांति हमारे निर्बल मन–मस्तिष्क को उर्वर पाकर पनपती है। यद्यपि रहीम ने इस परजीवी अमर बेल का दृष्टान्त देकर प्रभू भक्ति को बढ़ावा दिया है किन्तु सबल मन और ऊँचे मनोबल के लिए भ्रांति रूपी परजीवी बेल को छिन्न–भिन्न करके नष्ट करना अनिवार्य है। अमर बेल बिन मूल के प्रभु पालत है ताहि, रहिमन ऐसे प्रभुहिं तज खोजत फिरिये काहि – इस दोहे में दिलचस्पी लेने वाला व्यक्ति स्वयं परजीवी (पैरासाइट) बनकर निस्तेज हो जायेगा, भ्रांतियों का शिकार होकर सदैव जीवन मृत्यु के झूले में झूलता रहेगा। एक अर्ध जीवित शव समान। अतः इस दुर्दशा के मूल में स्थित उस कुत्सित अविद्या का नाश हम सत्य विद्या की वृद्धि द्वारा करेंगे।

भूत–प्रेत, जिन, पिशाच आदि को भटकती आत्मायें समझना यदि भ्रांतिमूलक विचार नहीं तो और क्या है। जो बीत गया वह भूत है और भूत कभी भी वर्तमान पर हावी नहीं हो सकता। एक शरीर छोड़ने के बाद आत्मा नये शरीर में प्रवेश करती है, अतः भटकती आत्मा भ्रान्ति है। बच्चों को शम जदी सुलाने के लिये विवेकहीन मातायें अक्सर भटकती आत्माओं का डर उनके मन में बैठा देती हैं। बच्चे जब किशोर और वयस्क हो जाते हैं तब भी भटकती आत्मा, जो मात्र भ्रांति है, का बोझ ढोते रहते हैं। अपने बच्चों को भ्रांति से भरे मस्तिष्क के कुसंग से बचाना माता–पिता आचार्य का पावन कर्त्तव्य है। 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषों वेद' – जब माता–पिता और आचार्य, तीनों ही अच्छे शिक्षक हों तो व्यक्ति ज्ञानवान होता है। एक ज्ञानी व्यक्ति भ्रांति की भर्त्सना करता है, उसको कदापि प्रश्रय नहीं देता।

कभी–कभी शिक्षित और प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए या लोभवश भ्रांतियों को प्रश्रय देते हैं उनसे हमें दूर रहना चाहिए। भारत में थ्योसाफिकल सोसायटी के संस्थापक कर्नल हेनरी अल्काट और उनकी सहयोगी मैडम बैलेवेट्स्की भूत के अस्तित्व में आस्था रखते थे। सभ्य समाज में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए उन्होंने शिमला में एक भूत की फोटो खींचने का दावा किया। अन्य छायाकारों ने इसे झूठा पाया, भूत की फोटो सिर्फ ट्रिक फोटोग्राफी थी। भूत के वकील की ढोल में पोल थी।

भ्रांति जननी है अंधविश्वास की। साधारण मनुष्य पहले सत्य का सहारा ढूंढता है ताकि अपना और स्वजन का आत्मविश्वास जगा सके। आत्म विश्वास से ऊँचा होता है मनोबल। आत्म विश्वास और मनोबल से मनुष्य समस्याओं का समाधान ढूंढने में सफल होता है। अतः सत्य विद्या और सत्य विद्या का आदि मूल परमेश्वर ही आधार है। आनन्दमय जीवन के अनेक अंधविश्वास, जैसे कब्र पूजा, ताबीज बांधना, बिल्ली द्वारा रास्ता काट जने को विघ्न मानना, ये सब निर्बल मन की उपज है। सच्ची वास्तविकता पर आधारित आनन्दमय जीवन में कभी न होगा भ्रांतियों का भार।

– 909, सैक्टर–29, नोएडा (उ. प्र.)

आवश्यकताऽऽविष्काराणां जननी भवति

– डॉ. केशव प्रसाद उपाध्याय, प्रधानाचार्य गुरुकुलमहाविद्यालयः ज्वालापुरम्, हरिद्वारम् (उत्तराखण्ड)

यानि वस्तूनि स्वप्नेऽपि नानुभूतानि, येषां स्वरूपस्य कल्पनाऽपि मानसं नावगाहते स्म। यदि प्रकृत्या तेषामावश्यकता कस्यापि कृते प्रसूयते, तानि वस्तूनि निर्मातुं स प्रवर्तते। अयमेवार्थो विवेच्यतया शीर्ष स्थाने लिखितस्यास्य प्रबन्ध विषयस्य।

यदि वयं पुरातन युगेतिहासेषु दृष्टिं क्षिपामः, यदा सभ्यता प्रारम्भोऽपि नासीत्, आविष्काराणाम् आवश्यकतामेव प्रसूता इदं स्पष्टमवगच्छाम्। तस्मिन् समये मनुष्याः पशुवत् वर्त्तन्तेस्म, पत्रेषु भुज्जतेस्म, वस्त्राणामुपयोगं नाज्ञासिषुः, वृक्ष शाखासु कुशकासादि सङ्कलायां वा धरायां अशयिषत् ते अस्त्राणामुपयोगे वहिन कार्यं च नाविदन्। परमयं समयोऽपगतः क्रमशस्त एव मानवाः सीतातपवात्याभ्यः स्वं गोपायितुं गृहस्यावश्यकताम् अनुभवितुमारभन्त। ततश्च गृहनिर्माणप्रक्रिया मुदभावयन्, एवं वस्त्राणां स्थाने पशूनां चर्माणि समुपायुज्यत।

यदा च मनुष्याः परेभ्यः स्वस्य रक्षाया आवश्यकता मनसि विविदुः। भोजनार्थं पशूनां मांसं चापेक्षितवन्तस्तदनन्तरं प्रस्तर खण्डानि तेष्वेव संघृष्य नाना विधानि शस्त्राण्यस्त्राणि च निरमायिषु यैर्भेदनच्छेदनादि कार्यं सुकरं समपद्यत। कतिचित् सराणि चामयासमश्नतां तेषां जाते मुख वैरस्ये ते पाक–क्रियाया आवश्यकतां निरधारयन्, यतस्ते पाक प्रक्रियामनुसमधिषत।

उपर्युक्ताद् विवरणादिदमवधार्यते, किमपि वस्तु बलादिवाविष्कारयति। एवं हि वस्तुस्थितिः कोऽपि किमपि वस्तुं विना कस्याश्चित् कठिनायां स्थितौ पतति, न चोपलभते प्रतिकारपथम् विमानायते च तदनुपलब्ध्या, ततः कंचनोपायं तत्प्रतीकारस्य सर्वात्मना चिन्तयति लभते च तदुपाया एवाविष्कार स्वरूपतया परिणमन्ते।

यदि मनुष्यः कश्चित् सर्वमपि मनोभिलषितं वस्तु सद्य एवाधिगच्छेत्, न प्रतिबद्धमनोरथतया खिद्येत। किमर्थं स व्याप्रियेत चेतसि, कुतश्च निर्गच्छेयुर्नवा पदार्थाः। परमत्र प्रतिक्षणं नूतनतामर्थयमाने जगति केवलं भोजनेनाच्छादनेनैव च मानवस्य तृष्णा नोपशाम्यति। स किमप्यन्यदपि कामयते, तदर्थमपि तस्य बुद्धिर्व्याप्रियते, ततोऽपि च बहव आविष्कारा जन्म लभन्ते।

अत्र जगति बहव ईदृशा अपि सन्ति पदार्थाः येषामाविष्कारा नावश्यकतापारवश्यकृतः, यथा वाष्पशक्तिविद्युदादिकाः पदार्थाः, तानन्तरापि मनुष्यां जीवनं न प्रत्यवध्यत। एवं च आविष्कारा आवश्यकताभिरेव जन्यन्त इति रिक्तवचः इति श्रुवतः प्रतिवक्तव्यं यतः मानवानामावश्यकता न केवलं कायिक्य एव भवन्ति, ते मानसिक भोजनं लब्धुं प्रयतन्ते। जातेऽपि जीवन धारणोपाये मानसिकं तद् भोजनं च तदीयाविरतबुद्धिव्यापार प्रभावेण समुपहियते, व्याप्रियन्ते, तदाऽऽविष्कारा जन्म गृहणन्ति, शब्द प्रसारणयन्त्रम्, वायुयानम्, तडित्पत्रम् इत्यादय एवं प्रकारा एव।

एवं हि श्रूयते कुत्रापि पर्वत शिखरे समासीनः एकः काकः पिपासा क्षामकण्ठो भूमौ विवरे जलमपश्यत्, पर्वत शिखराश्च भुवमवतार परं भुवि समवतीर्णस्यातिस्य विवरस्थं जलं पातुं शक्तिर्नाभवत्। पिपासया पीडितश्च स इतस्ततः पश्यन्नपि किमपि वर्त्म नाद्राक्षीत्। जलं विना शुष्यदाननविवरस्य तस्य मनस्येक उपायः स्फुरति स्म। तत्र वर्तमानानि लघूनि प्रस्तर खण्डानि चंचुपुटेनादाय विले क्षप्तुमारभत, तेन विले भृते तत्रत्यं जलं बहिरभवत्। स काकः स्वां पिपासां शमितवान्।

दृश्यतामत्र कथायामाविष्कारः कथमावश्यकता बाधितेन काकेन व्यधीयत। यदि पक्षिषु एतादृशी स्थितिः, का कथा पुरुषाणाम्? 'थोमस एडिसन' महोदयः कियतांशेन बधिरोऽतः शब्दव्यापारान्वेषणप्रवृत्तश्चासीत्। अनुसंधान प्रवृत्तेनैव तेन 'फोनोग्राफ' नामकं यन्त्रमाविष्कृतं यद्धुना प्रतिपल्लब्धसंचारम् अस्माकमेव देशस्यालङ्कारः श्रीमान् इन्दुमाधवमलिक महोदयः स्वयं प्रवाहिकया पीड़ित आसीत्, स सुपचं भोजनं पक्तुं प्रकारमनुसन्दधान एकं यन्त्रमाविष्कृतवान् यद्धुना जनाः 'कुकर' इति नाम्ना व्यवहरन्ति।

एतावता समर्थितं साधु तथ्यमिदं यद् यदा कापि परमावश्यता पुमांसं व्याकुलयति, तदा तदीया मतिर्न विश्राममधिगच्छति। अविश्रान्तं व्याप्रियमाणा च समतिः सुप्तां स्वां शक्तिमुद्बोधयति। तत्प्रभावेणैव चालसाः सव्यापाराः दुर्बला बलवन्तः अविचारकाः विचार चतुराश्च सम्पद्यन्ते। जगतः सर्वोऽपि व्यापार आवश्यकता प्रसूत एव। याद्यवश्यकता दिनानुदिनं नैधैत, यथावस्थितमिदं जगत् पदपति पुरतो न स्पन्देत। प्रतिदिनं वर्धमाना जनसंख्याऽऽवश्यकतां वर्द्धयन्ती संहार कराण्यस्त्राण्यपि समुत्पादयति। अतः केनापि साधुसमर्थितमिदं यद् –

आविष्कारा आवश्यकतया जन्यन्ते।

वैदिक शिक्षा देने हेतु आचार्या की आवश्यकता

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्रीनगर, लुधियाना में ब्रह्मचारिणियों को वैदिक शिक्षा देने हेतु आचार्या की आवश्यकता है। जिनकी न्यूनतम योग्यता आचार्या (एम.ए. हिन्दी/संस्कृत) व आयु कम से कम 30 वर्ष हो। आवासीय सुविधा उपलब्ध रहेगी व खान–पान का भी प्रबन्ध होगा। मानदेय योग्यतानुसार होगा। इच्छुक अपना आवेदन पत्र 10 नवम्बर, 2021 से पहले गुरुकुल कार्यालय में जमा करवा दें अथवा ईमेल rsmodelsss@yahoo.co.in पर भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नम्बर–9915042585 श्री जगजीव बस्सी (मंत्री आर्य समाज मॉडल टाउन, लुधियाना) पर सम्पर्क करें।

– श्री सुरेश मुंजाल, प्रधान

आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित स्व. श्री ईश्वर चंद्र त्यागी जी के जन्मदिन के अवसर

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का किया गया भव्य आयोजन

आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित आर्य समाज शकरपुर दिल्ली के पूर्व पुस्तकाध्यक्ष, पूर्व निदेशक नई दिल्ली नगर परिषद् स्व. श्री ईश्वर चंद्र त्यागी जी के जन्मदिन के अवसर पर उनकी धर्मपत्नी धर्मपारायणा श्रीमती अरुणा लता त्यागी जी ने दिनांक 24 से 29 सितंबर, 2021 तक अपने निवास स्थान शकरपुर, दिल्ली–92 में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन किया। दोनों समय चले इस यज्ञ में सैकड़ों लोगों ने आहुतियाँ प्रदान की। इस यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल बरनावा के आचार्य प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य गुरुवचन शास्त्री जी रहे। वेदपाठ भी गुरुकुल के शिक्षकों तथा ब्रह्मचारियों ने अत्यन्त सुचारू ढंग से किया। ज्ञातव्य हो कि श्री ईश्वर चन्द्र त्यागी जी ने अपने जीवनकाल में ही तीन वेदों का पारायण सम्पन्न करा दिया था। उनके चारों वेदों के पारायण के संकल्प को उनकी धर्मपत्नी धर्मपत्नी श्रीमती अरुण लता त्यागी जी ने पूर्ण कर दिया है। इस भव्य आयोजन में उनके पारिवारिकजनों के अतिरिक्त आर्य समाज शकरपुर के कार्यकर्ताओं ने विशेष सहयोग कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

– राकेश शर्मा, मंत्री आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी चन्द्र वेश जी का निधन

यज्ञ व व्याकरण के मर्मज्ञ थे स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज –स्वामी आर्यवेश

वेदों के प्रकांड विद्वान थे स्वामी चंद्रवेश जी महाराज–अनिल आर्य

बुधवार 29 अक्टूबर 2021, शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम आर्य नगर गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का अचानक निधन हो गया। निधन का समाचार सुनकर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने तुरन्त आनन–फानन में एक ऑन लाईन बैठक आयोजित करके पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया। इस ऑन लाईन बैठक में मुख्य रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी सम्मिलित रहे।

इस अवसर पर ऑन लाइन बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि स्वामी चंद्रवेश जी व्याकरण के सूर्य थे। वह महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त व संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी रहे। पूज्य स्वामी जी के निधन से आज समस्त संन्यासी मंडल एवं पूरा आर्य जगत शोक ग्रस्त है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी वेदों के प्रकांड विद्वान थे। बड़े–बड़े

यज्ञों के ब्रह्मा पद को सुशोभित करते थे, उनके जाने से आर्य समाज की अपार क्षति हुई है। स्वामी जी अत्यन्त सरल स्वभाव के व्यक्ति रहे जिसको मिलते थे अपना बना लेते थे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री श्री प्रवीन आर्य ने कहा कि स्वामी चंद्रवेश जी गाजियाबाद जिले की शान थे। गाजियाबाद जिले की अधिकांश शोभा यात्रायें उनके नेतृत्व में ही सम्पन्न होती थी। उनके जाने से एक गौ–सेवक की कमी हमेशा महसूस की जायेगी।

हापुड़ आर्य समाज के श्री आनंद प्रकाश आर्य, वृंदावन गार्डन से श्री के. के. यादव, श्री सुरेश आर्य, श्री प्रमोद चौधरी, इंदिरापुरम से श्री यज्ञवीर चौहान, श्री देवेन्द्र गुप्ता, श्री यशोवीर आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री अरुण आर्य, उर्मिला आर्या, श्री देवेन्द्र भगत, डॉ आर. के. आर्य आदि ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए उनकी सेवाओं को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

।।ओ३म्।।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य 4100/– रु. में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।